ISSN No. 2394-9996

``भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी अज़ीज़न``

प्रा.डॉ. संतोष विष्णू मस्के
महिला कला महाविद्यालय, बीड

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास नारी के वर्णन बिना पूर्ण नही हो सकता। 1937 ई. में स्वर्गीय मज़ाज़ से भारतीय की युवा महिलाओं को संबोधित करते हुए उपदेश दिया था।

``तेरे माथे पे यह आंचल बहुत ही खुब है,
लेकिन तू इस आंचल से एक परचम बना लेती
तो अच्छा था।``

स्वतंत्रता संग्राम का भारी दायित्व अपने कांधो पर उठाकर असाधारण साहस एवं वीरता का परिचय दिया और उन महान विभूतियों की सूची में अपना नाम अंकित करा लिया, जिनके कर कमलों द्वारा आज़ादी के भव्य किले की नींव रखी गई।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भारी संख्या अपने क्रान्तिकारी भाईयों के कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता संघर्ष में शरीक रही और शहीद होने का सौभग्य प्राप्त किया। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास ने जिन चुनिंदा नामों को सुरक्षित कर लिया है उनमें `अज़ीज़न` का नाम प्रमुख हैं। स्वतंत्रता संग्राम में देश की खातिर बिथौर की इस वीर सेनानी का बलिदान निःस्वार्थ था। उस में न तख्तो-ताज या धन की इच्छा थी ओर न महलों के आराम और ऐश्वर्य की अभिलाषा। अ़ज़ीज़न सुन्दरता और कोमलता की मूरत यह नर्तकी 1832 ई.में. लखनऊ में पैदा हूई पिता हसीन ख़ान और माँ हमीदा बेगम थी जो उसकी पैदाइश की कुछ मुद्दत के बाद इस दुनियासे कूच कर गई।

अ़ज़ीज़न प्रसिद्ध उमराव जान अदा के यहाँ सारंगी महल में रहा करती थी। एक कथन के अनुसार उसे शम्शुद्दीन से हार्दिक लगाव और प्रेम था जो पहले अंग्रेजी फौज में सूबेदार थे और बाद में उसे छोड कर नाना साहब पेशवा से मिल गया था अनुमान यही है की अज़ीज़न शम्शुद्दीन के साथ कानपुर आ बसी।

उन्हे अपने शासक नाना साहब की वफादारी पर गर्व था, जिसके लिए बडी से बडी कुर्बानी उस के लिए कोई हैसियत नही रखती थी। खस तौर पर वह अंग्रेजी शासक की दुश्मन थी, इस लिए अपने जीवन की अंतिम साँस तक उसके

सामने अपना सर नही झुकाया। 07 जून 1857 ई.कों नाना साहब पेशवा की ओर से हिन्दी और उर्दू में एक एलान जारी किया गया, जिसमें हिन्दू और मुसलमानों से संयुक्त अपील की गई थी कि वे अपने देश और अपने धर्म की खातिर अंग्रेजी साम्राज्य से टक्कर लेने के लिए एक हो जाएँ और अधिक से अधिक संख्या में फौज में भर्ती हों। फौजी भर्ती का एलान सुनते ही यह वीर महिला घर बार परिवार छोडकर अपने साथियों सहित युद्ध के मैदान में कूद पड़ी। और अपने शम्शुद्दीन के सहयोग और मार्गदर्शन से उसने औरतों की एक छोटी सी फौज तैयार की। वह नगर, गाँव के घर-घर जाती औरतों को घुड़ सवारी और हथियारों का चलाना लडना आदि सिखाती अ़ज़ीज़न खुद स्वयं अपनी फौजी टुकड़ी के विशेष परिधान में कंधे पर तमगे सजाए सवार होकर निर्भय इधर से उधर घूमती थी। उनकी प्रशासनिक क्षमता भी बडी बेपनाह थी। उत्तर प्रदेश में महिलाओं की फौजी टुकड़ियों की स्थापना इस महान महिला योद्धा के प्रयासों का ही परिणाम था।

घायल सिपाहियों को उपचार सहायता करना, सिपाहियों के लिए गोला बारूद इकट्ठा करना, उनके लिए कपडे, खाना उपलब्ध करना खास तौर पर उन बहादुर सिपाहियों के लिए जो जून की गर्मी में अंग्रेजी सिपाहियों के मुकाबले पर जमे थे।

अ़ज़ीज़न घर-घर से ताजा फल, मिठाई और मेवे भी इकट्ठा किया करती थी। साथ ही महत्वपूर्ण कामों में जासूसी करना, सैनिक रहस्यों तथा भेदों की जानकारी प्राप्त करना तथा उनके विभिन्न महत्वपूर्ण लोगों तक पहुचाना और उन बुजदिलों को शर्म भी दिलाना था जो भय के कारण अपने घरों में छिपे हूए थे, अ़ज़ीज़न खास तौर पर ऐसे मर्दो को खुद चूड़िया पहनाती थी। इस शर्मिंदगी से बचने के लिए जनता की भारी संख्या ने फौज में भर्ती होना शुरू कर दिया।

अपनी विशेष वर्दी में घोड़े पर सवार, हाथ में तलवारे लिए जब विशिष्ट राजमार्गो से गुजरती तो सडक के दोनों ओर खड़ी भीड़ `अ़ज़ीज़न जिन्दाबाद` के गगन भेदी नारों से अभिनंदन करती थी। इन्किलाबी कमान की सक्रिय सदस्या होने बावजुद वो नाना साहब पेशवा के दाया हाथ कहलाए जाने वाले अजीमुल्लाह खान और तात्या टोपे का उसपर पूरा भरोसा था। लेकीन 1857 की क्रांति के असख्ंय मोर्चे की भांति कानपुर में कर्नल विलियम ने बागियों की सूची तैय्यार की तो अ़ज़ीज़न का नाम सर्वेपरि था। अंग्रेजो की प्रतिशोधात्मक कारवाई में जब अ़ज़ीज़न को कैदी के रूप में जनरल हयोलाक के सामने लाया गया तो वह सुन्दरता की उस मूर्ति को देख दंग रह गया। उसके लिए यह कल्पना भी असंभव थी कि गुलाब की भांति एक दम तरोताजा फुल की पत्ती जैसी कोमल यह लड़की फौजी वर्दी में हाथियारों से सज धज कर युद्ध के मैदान में उतर सकती थी। वह भी एक जमाना

था महिला लड़ाई के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। कहा जाता है कि हयोलाक जैसे क्रूर दरींदे का दिल भी उसे देख पसीज गया था और वो हर कीमत उसे बचाना चाहता था। अज़ीज़न आज़ादी के लड़ाई की पहली महिला योद्धा थी। जिसने सभी ऐशो आराम को ठुकरा दिया। हयोलाक के आदेश पर सिपाहियों ने अ़ज़ीज़न के नाजुक बदन को छलनी कर दिया। लेकिन फिर भी अ़ज़ीज़न एक अविस्मरणीय हाकीकत बन गई थी। आज भी बिथौर के गाँव में उसकी वीरता, प्रशासनिक क्षमता और देश की खातिर नि:स्वार्थ बलिदान की कहानी आज भी मुद्दत तक सुनाई जाती हैं।

अ़ज़ीज़न और उस जैसी विराको कोटी कोटी प्रणाम....

संदर्भ सूची :

1) Alkabir alkausar : Prominet Muslim women in India Billigraphical. Dictionary P.3942.
2) Muslim Women Patriots of 1857 Thomson Smith the stateman March - 1986.
3) भारत के स्वातंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं का योगदान - डॉ. आबिदा समीउद्दीन.

☆ ☆ ☆